International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 25-04-2020; Accepted: 14-05-2020; Published: 26-05-2020
Volume 2; Issue 2; 2020; Page No. 09-10

संचार माध्यम के रूप में हिन्दी भाषा का वैष्विक स्वरूप

अनिता पाटीदार
सहायक प्राद्यापक (अतिथि विद्वान), हिन्दी साहित्य, शा. महाविद्यालय. शामगढ़, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना–

संचार संस्कृत के 'चर' धातु तथा 'सम' उपसर्ग से मिलकर बना है चर का अर्थ है चलना या आगे बढना सम उपसर्ग का मतलब सम्यक आचरण बोध से है, संचार का सामान्य अर्थ बहना, चलना अर्थात किसी सूचना को दूसरे स्थान तक पहुंचान, अंग्रेजी में संचार के लिये Communication शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है बढना, फैलाना। संचार के बारे में कहे तो विचारों, सूचनाओं और अभिवृत्तियों को एक स्थान से दुसरे स्थान तक सम्प्रेषित करने का कार्य है। मनुष्य समाज में रहता है और इस नाते एक दूसरे के साथ अपनी भावनाओं, अनुभवों को बाटकर व स्वंय का आत्मीक और मानसिक विकास करता है प्रत्येक मनुष्य बोलने, सुनने, सोचने, देखने, पडने, लिखने या विचार अभिव्यक्त करने, विचार विमर्श करने आदि संचार के अन्तर्गत आता है। अतः हम कह सकते है कि मानवीय हाव भाव, वाणी के द्वारा विचार व्यक्त करना, संकेत के माध्यम से सूचनाओं, जानकारी का आदान प्रदान करना संचार कहलाता है।

'भाषा'शब्द का सम्बध भाष् धातु से है जिसका अर्थ जिसे बोला जाए या बोलना, मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता है ऐसे सभी साधन भाषा के अंतर्गत आते है जैसे – ट्राफिक सिग्नल के हरा और लाल होने के संकेत पर मानव रूकता है, चलता है। मूक बधीर संकेतो से बात करते है। पिता अपनी घूरती हुई दृष्टि से पुत्र के प्रति नाराजगी प्रकट करता है आदि भाषा के उदाहरण है। हिन्दी भाषा की बात करते है तो आज यह अपनी उद्भवकाल के सीमित दायरों को तोड़कर विश्व स्तर पर प्रसारित हो चुकी है। इसकी विकास यात्रा में अनेक ऐसे पढाव आये, कई रूप बदले और आज विश्व पटल पर मजबूती के साथ समृद्ध होकर खडी है आज UNO संयुक्त राष्ट्रसंघ की अधिकृत भाषा की और अग्रसर है।

भाषा किसी भी समाज और संस्कृति की मौलिक जरूरत है हिन्दी भारत में सबसे बडे भू–भाग पर बोली जाने वाली भाषा है। भारतीय संविधान में इसे 14 सितम्बर 1949 को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है तथा इसे राष्ट्र भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। इससे स्पष्ट है कि हिन्दी एक विशाल आबादी द्वारा बोली जाती है संचार भाषा के रूप में हिन्दी विश्व स्तर पर प्रमुख भाषा के रूप में खडी हो गई है। हिन्दी भाषा संचार के रूप में पत्रकारिता, कलासाहित्य, पत्रिका इन्टरनेट, चलचित्र, रेडियों, दुरदर्शन मुद्रिक शब्द आदि का ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर सृजन हो रहा है। अप्रवासी भारतीयों ने हिन्दी को इसी विदेशी जमीन पर विशाल पैमाने पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आज हिन्दी अखबार, पत्रकारिता एवं टेलीवीजन में को प्रमुखता दी जा रही है। ''विदेशो में हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य बहुत ही भव्य दिखाई पड रहा है जहां आज कही साप्ताहिक निकल रहे है वहा के लोग दैनिक का प्रयास कर रहे है और जहां कुछ भी नही है वहां साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, का श्री गणेश शीघ्र होने वाला है संसार के कौने–कौने में हिन्दी के प्रति जो प्रेम का भाव आज उमड़ रहा है वह निश्चित रूप से विदेशो में हिन्दी पत्रकारिता के समुज्जवल भविष्य की सुदृढ आधार भूमि प्रस्तुत करेगा।'' संचार भाषा के रूप में हिन्दी ने नये किर्तीमान स्थापित किये है दैनिक हिन्दी समाचार पत्रो की पठनियता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है इस कारण पत्रकारिता लोकप्रिय हो गई है एक नवीन सर्वेक्षण के अनुसार हिन्दी बोलने, पढने, लिखने समझने वाले प्रकार्यो में से किसी एक से सम्बध रखने वालो की संख्या 70 करोड उपर पहुंच गई है। अंग्रेजी भले ही उत्पादको की भाषा बनी है किन्तु उपभोक्ता की भाषा तो हिन्दी ही मानी जायेगी। एक कनाडीयन विद्धान ने भविष्यवाणी की थी कि आगामी दो दशक के बाद विश्व में केवल अठ्ारह भाषा ही रह जायेगी, जिसमें से एक हिन्दी भाषा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी तथा बाजारवादी प्रवृत्ति पर हम विचार करे तो यह कथन निराधार नही कहा जा सकता है हिन्दी भाषा का अपना सार्वभौमिक स्वरूप है, इसके पीछे एक गुण यह भी है कि हिन्दी सर्वग्राह्यता के गुण से पुष्ट है। पचास प्रतिशत शब्दावली सीधे संस्कृत से विरासत में मिली और कुछ शब्दावली प्राकृत, अपभ्रंश और विदेशी भाषा के शब्द हिन्दी में अपना लिये गए, जिससे हिन्दी भाषा की गुणवत्ता और लोकप्रियता बढी।

हिन्दी भाषा संचार के रूप में आज प्रतिदिन काम आने वाली जानकारियों से लेकर, व्यापार, वाणिज्य, जनसंचार, के साधनो, डाकतार विभाग, सरकारी कार्यालयों, चिकित्सा, मनोंरजन, आदि ने हिन्दी भाषा का संचार के रूप में प्रवेश हो चुका है हिन्दी भाषा का संचार के रूप में प्रयोग देखकर आज विश्व चमत्कृत है। आज विश्व में सेकडों पत्र–पत्रिकाओं को हिन्दी भाषा में पढा जाने लगा है। हिन्दी भाषा संचार के तौर पर सिर्फ नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध, आदि तक सीमित नही रही बल्कि अब यह अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त होने लगी है। आज हिन्दी प्रशासन, चिकित्सा, न्याय, शिक्षा, विधि, तकनीकी, बैकिंग जैसे अनेक क्षेत्रो का सशक्त माध्यम बन गयी है। संचार के माध्यम में लोगो तक सूचनाओं को पहुंचाने में जनसंचार के साधन महत्वपूर्ण भुमिका निभा रहे है। मनोंरजन में फिल्म भी एक बहुत बडा संचार का माध्यम है वर्तमान समाज में विश्व स्तर पर हिन्दी भाषी फिल्में देखी जा रही है। इसका विस्तारपूर्वक विवरण सम्भव नही है। आकाशवाणी, रेडियो, दृश्य एवं श्रव्य, साधन संगीत, जनमत, जनतंत्र, जनसम्पर्क, संगठन, संगोष्ठी, सेमिनार आदि के माध्यम से हिन्दी भाषा संचार का महत्व बढ रहा है। ''भारतीय भाषाओं के अखबारों एवं पत्र–पत्रिकाओं से भावी विकास की संभावनाएँ बढी है शिक्षा के साथ–साथ जनजाग्रति बढ रही है केवल राजनीतिक क्षेत्र ही नहीं व्यापार, सांस्कृतिक जीवन तथा अन्य क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ रही है'' कह सकते है कि संचार मानव के लिये वायु और आकाश की तरह अनिवार्य है। संचार के बिना जीवन निरूद्वेश्य और अर्थहीन समझा जायेगा।

रेडियों पर हिन्दी भाषा में संचार ग्रामीण एवं शहरी जीवन में देखने को मिलता है। रेडियो पर अनेक सामाजिक जीवन से जुडी विकासात्कम

जानकारी दी जाती है इसका उद्धेश्य लोगो में जागरूकता लाना एवं समकालीय समाज से जोडना, चेतना लाना, शिक्षा की ओर प्रेरित करना आदि की जानकारी हिन्दी में प्रसारित की जाती है। ''आकाशवाणी द्वारा देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, एतिहासिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रो की उन्नति हो रही है।'' समाचार पत्रों को जहां सिर्फ पढा लिखा व्यक्ति ही समझ सकता है वहीं रेडियो से निरक्षर व्यक्ति भी सुनकर समझ सकता है दूसरी बात ग्रामीण क्षेत्रों में हिन्दी भाषा आसानी से समझी जा सकती है हिन्दी संचार के रूप में रेडियो पर किसान, खेती, फसल, संगीत, रेडियो नाटक, गृहस्थी से जुडे कार्यक्रम, महिलाओ से संबधित, विदेशी प्रसारण सेवा, समाचार, आदि कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया जाता है। ''रेडियो पर जो भी अधिकाधिक हिन्दी का प्रयोग किया जाता है वह अधिकाधिक लोगो को समझ में आ जाता है।''

विज्ञापन के क्षेत्र में भी हिन्दी भाषा संचार उपभोक्ता और उत्पादक के बीच कडी है। हिन्दी भाषा उपभोक्ता को सहज आकर्षित करती है। विज्ञापनो में उपभोक्ता की सामाजिक पृष्ठभूमि सामने रखकर ही विज्ञापन की भाषा तय की जाती है और ऐसे में हिन्दी भाषा सरल, सहज और आसान होने से व्यापक क्षेत्र में लोकप्रिय भी है विज्ञापन संचार का प्रमुख अंग है।

दुरदर्शन संचार का सशक्त माध्यम है यह दृश्य और श्रव्य माध्यम है 1982 के ऐशियाई खेलों के दौरान रंगीन प्रसारण शुरू हुआ सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा दूरदर्शन का मुख्य ध्येय सूचना को हर व्यक्ति तक पहुंचाना, शिक्षा का प्रचार प्रसार करना और सामाजिक विकास को बढावा देना, साथ ही विज्ञान एवं तकनिकी कार्यक्रमों को बढावा देना, अंधविश्वासों को नष्ट करना, कला, साहित्य, संस्कृति मनोंरजन, खेलकूद, पर्यावरण, कृषि, एवं अन्य संबधित कार्यक्रमों का संचालन करना, और समाज देश के विकास में जागरूकता फैलाना। इन्टरनेट संचार के क्षैत्र में दुनिया का सबसे अधिक सक्षम माध्यम है। आज इन्टरनेट पर हिन्दी सेवाएं दी जा रही है। इन्टरनेट के माध्यम से अतिशीघ्र आकडो का सम्प्रेषण, समाचार, संदेश, मेल, विभिन्न पत्र एवं पत्रिकाओं का अध्ययन, पुस्तको का अध्ययन देश विदेश में घर बैठे समस्त जानकारियों का लाभ हिन्दी भाषा में उठा सकते है। नई टेक्नालॉजी ने संचार प्रक्रिया को पहले से सुगम बना दिया है। इन्टरनेट पर हिन्दी भाषा में संचार करने की संख्या निरंतर बढती जा रही है।

मुद्रित संचार के तौर पर पेजर, स्क्रीन, डिस्प्ले, पेम्पलेट, होर्डिग्स, साईन बोर्ड, कियोस्क, पथदर्शक, आदि संचार को पुष्ट करते है जिसके कारण हिन्दी को पर्याप्त लाभ भी होता है। स्क्रीन, डिस्प्ले, हिन्दी के भाषीक प्रयोग को नियमित करने की प्रक्रिया का अंग है। पथदर्शक मार्गो चौराहो, बाजारो आदि में लगाये जाते है। जिनमें हिन्दी का प्रयोग अधिक होता है। और ऐसे में संचार के हिन्दी माध्यम को अधिक बल मिलता है।

कियोस्क का प्रयोग वाणिज्य, व्यापार, उद्योग, बैकिंग, परिवहन आदि में होता है। इसमें भी हिन्दी, अंग्रेजी दोनो में प्रयोग होने पर स्थानीय लोग हिन्दी का प्रयोग अधिक करते है। पेजर पर कई चेनल होते है एक चेनल पर कम्पनी लगातार सूचना और समाचार को प्रसारित करती रहती है। पेजर हिन्दी के प्रचार प्रसार में उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसमें भी अधिक संख्या में हिन्दी सूचनाएं प्राप्त की जाती है। इसका प्रयोग आसान होने के कारण बहुतायत लोगो द्वारा उपयोग किया जाता है।

हिन्दी भाषा का संचार के रूप में सफल प्रयोग हो रहा है। संचार के तौर पर हिन्दी का सर्वोपरि और कारगार एवं रचनात्मक प्रयोग हो रहा है। यह उपयोग स्थानीय, क्षैत्रिय नही बल्कि पूरे देश एवं विश्व स्तर पर देखा और समझा जा सकता है आज हिन्दी ने अपने पैर पसार लिये है जिसका प्रभाव समाज साहित्य संस्कृति कला विज्ञान आदि में संचार माध्यम हिन्दी की भूमिका प्रकट होती है।

भविष्य में हिन्दी भाषा संचार बहुत प्रभावी सिद्ध होने वाला है इसके प्रमाण अभी से प्राप्त होने लगे है। हिन्दी भाषा संचार भविष्य में चतुर्दिक दृष्टि से उज्जवल दिखाई दे हा है। भविष्य में हिन्दी संचार को नये शिखर तक ले जायगा हिन्दी संचार राष्ट्रीय स्तर से लेकर विश्व पटल पर प्रभावी भूमिका के साथ उपस्थिति दर्ज कराएगा, और हिन्दी भाषा संचार का एक विशाल समीकरण उभरेगा। हिन्दी भाषा वर्षो से अनेक थपेडो को सहते हुए बिना लडखडाऐ मजबूती के साथ खडी हैं। हिन्दी भाषा में संचार आज अंगद के पैर के समान है जिसे ना कोई हिला सकता है ना ही गिराने का सामर्थ्य कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. संतोष गोयल, जनसम्पर्क विज्ञापन।
2. भोलानाथ तिवारी सं. डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिन्दी ।
3. डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डे, संचार माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग साहित्य रतनालय कानपुर
4. डॉ. त्रिभुवन राय, जनसंचार माध्यम चुनौतियां और दायित्व, युनीवर्सिटी बुक हाडस लि. जयपुर
5. डॉ. चन्द्रकुमार जनसंचार माध्यमों में हिन्दी, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।